Anusandhanvallari
Vol 2025, No.1
January 2025
ISSN 2229-3388

डिजिटल राजनीति और यूपी की महिलाएं : सोशल मीडिया के माध्यम से राजनीतिक लामबंदी का एक अध्ययन

[1]नीलिमा सिंह, [2]डॉ सीमा शर्मा

[1](शोध छात्रा) राजनीति विज्ञान, कला विभाग

मंगलायतन विश्वविद्यालय, बेसंबा, अलीगढ़

[2](शोध निर्देशिका) राजनीति विज्ञान, कला विभाग

मंगलायतन विश्वविद्यालय, बेसंबा, अलीगढ़

सारांश

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश की महिलाओं द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से राजनीतिक लामबंदी की प्रक्रिया का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। उत्तर प्रदेश, भारत के सबसे अधिक जनसंख्या वाले राज्य में, जहां पितृसत्तात्मक संरचनाएं तथा सामाजिक-आर्थिक बाधाएं महिलाओं की पारंपरिक राजनीतिक भागीदारी को सीमित रखती हैं, डिजिटल माध्यमों ने एक परिवर्तनकारी भूमिका निभाई है। शोध में द्वितीयक आंकड़ों शैक्षणिक अध्ययन, सर्वेक्षण रिपोर्ट, चुनाव आयोग के आंकड़े तथा विभिन्न प्रकाशनों-के आधार पर यह दर्शाया गया है कि व्हाट्सएप, एक्स (पूर्व ट्विटर), फेसबुक तथा इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्मों ने महिलाओं को सूचना प्राप्ति, संगठन, जागरूकता प्रसार तथा जनमत निर्माण में सशक्त बनाया है। शोध का निष्कर्ष है कि सोशल मीडिया ने उत्तर प्रदेश की महिलाओं के लिए राजनीतिक लामबंदी के नए अवसर सृजित किए हैं तथा लोकतंत्र को अधिक समावेशी बनाने की क्षमता रखता है, किंतु पूर्ण सशक्तिकरण के लिए डिजिटल साक्षरता, इंटरनेट पहुंच तथा ऑनलाइन सुरक्षा से संबंधित नीतिगत हस्तक्षेप आवश्यक हैं। भविष्य के शोध में प्राथमिक डेटा (साक्षात्कार, सर्वेक्षण) के माध्यम से इन निष्कर्षों को और सुदृढ़ किया जा सकता है।

मुख्य शब्द: डिजिटल राजनीति, सोशल मीडिया, राजनीतिक लामबंदी, उत्तर प्रदेश की महिलाएं, लैंगिक सशक्तिकरण, डिजिटल विभाजन, हैशटैग सक्रियता, ऑनलाइन उत्पीड़न, मतदान भागीदारी, मुस्लिम महिलाएं, पितृसत्तात्मक संरचना

1. परिचय

उत्तर प्रदेश, भारत का सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य होने के कारण, राष्ट्रीय राजनीति का प्रमुख केंद्र रहा है। यहां की राजनीतिक गतिविधियां अक्सर देश की दिशा निर्धारित करती हैं। ऐतिहासिक रूप से, उत्तर प्रदेश में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी पितृसत्तात्मक मानदंडों, निम्न साक्षरता दर तथा सीमित गतिशीलता के कारण अत्यंत प्रतिबंधित रही है। परंतु डिजिटल राजनीति के उदय ने इस परिदृश्य में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाना प्रारंभ किया है। डिजिटल राजनीति से तात्पर्य ऑनलाइन माध्यमों, विशेषकर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों के माध्यम से राजनीतिक संचार, संगठन तथा सक्रियता से है। सोशल मीडिया ने महिलाओं को पारंपरिक द्वारपालों को दरकिनार कर अपनी आवाज बुलंद करने का अवसर प्रदान किया है।

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश की महिलाओं द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से राजनीतिक लामबंदी पर केंद्रित है। विशेष रूप से 2019 के लोकसभा चुनाव, 2022 के विधानसभा चुनाव तथा नागरिकता संशोधन अधिनियम (सीएए) विरोधी आंदोलनों जैसे संदर्भों में महिलाओं की भूमिका का विश्लेषण किया जाएगा। मुख्य शोध प्रश्न यह है कि सोशल मीडिया ने उत्तर प्रदेश की महिलाओं की राजनीतिक लामबंदी को किस सीमा तक सुगम बनाया है तथा इसकी प्रभावशीलता में क्या बाधाएं विद्यमान हैं? उत्तर प्रदेश में इंटरनेट प्रसार की तेज वृद्धि (2014 में लगभग 20 प्रतिशत से 2024 तक 50 प्रतिशत से अधिक) ने महिलाओं को नागरिक मुद्दों पर चर्चा, अभियान तथा संगठन में भाग लेने का माध्यम प्रदान किया है। तथापि, लैंगिक विभेद, डिजिटल असमानता तथा ऑनलाइन उत्पीड़न जैसी चुनौतियां भी उभर कर सामने आई हैं। यह शोध डिजिटल सशक्तिकरण के संदर्भ में उत्तर प्रदेश की महिलाओं की राजनीतिक यात्रा का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें जाति, धर्म तथा क्षेत्रीय असमानताओं को भी ध्यान में रखा गया है।

2. साहित्य समीक्षा

भारत में डिजिटल राजनीति पर उपलब्ध शोध सोशल मीडिया की दोहरी भूमिका को रेखांकित करते हैंकृएक ओर यह समावेशिता को बढ़ावा देता है, दूसरी ओर बहिष्कार को भी बढ़ाता है। विशेष रूप से महिलाओं के संदर्भ में, डिजिटल माध्यमों ने राजनीतिक भागीदारी को लोकतांत्रिक बनाया है। राज (2023) के अध्ययन में तर्क दिया गया है कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों ने भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को लोकतांत्रिक बनाया है, क्योंकि इनके माध्यम से महिलाएं अपनी आवाज उठा सकती हैं, सामाजिक-संगठन कर सकती हैं तथा राजनीतिक लामबंदी में भाग ले सकती हैं। यह विशेष रूप से उन महिलाओं के लिए महत्वपूर्ण है जो पारंपरिक बाधाओं से ग्रस्त हैं।

उत्तर प्रदेश में मुस्लिम महिलाओं के संदर्भ में, सोशल मीडिया ने जनमत निर्माण तथा सामाजिक सशक्तिकरण में योगदान दिया है। एक अध्ययन में पाओलो फ्रेयर की आलोचनात्मक चेतना सिद्धांत के आधार पर दर्शाया गया है कि सोशल मीडिया ने उत्तर प्रदेश की मुस्लिम महिलाओं को लैंगिक मुद्दों पर जागरूकता बढ़ाने, समुदाय संगठन तथा सामाजिक-राजनीतिक वकालत में सक्षम बनाया है। सर्वेक्षण से पता चला कि सोशल मीडिया उपयोग तथा सशक्तिकरण के बीच सकारात्मक संबंध है।

तथापि, लैंगिक चुनौतियां प्रमुख हैं। डिजिटल भीड़ तथा उसके समर्थकों पर अध्ययन में पाया गया कि भारत में महिला राजनीतिज्ञों के विरुद्ध लैंगिक गलत सूचना तथा ऑनलाइन उत्पीड़न एक प्रमुख हथियार बन गया है। विशेष रूप से ट्विटर (अब एक्स) पर महिला राजनीतिज्ञों को असमान रूप से अधिक यौन उत्पीड़न तथा असभ्यता का सामना करना पड़ता है, जो चुनावी ध्रुवीकरण को बढ़ाता है। उत्तर प्रदेश जैसे राज्य में, जहां बहुदलीय प्रतिस्पर्धा तीव्र है, महिला प्रत्याशियों को लक्षित असभ्य संदेश मतदाता धारणाओं को प्रभावित करते हैं।

सोशल मीडिया द्वारा राजनीतिक दलों की रणनीतियां भी महिलाओं को लक्षित करती हैं। भारतीय जनता पार्टी जैसी पार्टियां डेटा-आधारित ऐप्स के माध्यम से महिला मतदाताओं को संगठित करती हैं। विपक्षी दल भी हैशटैग सक्रियता तथा अभियानों का उपयोग करते हैं। रुमीटूइंडिया तथा रुदलितलाइव्समैटर जैसे अभियान उत्तर प्रदेश में महिलाओं की आवाज को मजबूत करते हैं, विशेष रूप से जाति तथा लैंगिक हिंसा के विरुद्ध।

डिजिटल विभाजन एक प्रमुख बाधा है। उत्तर प्रदेश में निम्न महिला साक्षरता (लगभग 60 प्रतिशत) तथा ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट पहुंच की कमी महिलाओं की भागीदारी को सीमित करती है। मिलेनियल भारत में वैश्विक डिजिटल राजनीति पर अध्ययनों से पता चलता है कि डिजिटल माध्यमों ने भागीदारी बढ़ाई है, किंतु असमानता बनी हुई है।

कुल मिलाकर, साहित्य यह दर्शाता है कि सोशल मीडिया ने उत्तर प्रदेश की महिलाओं के लिए राजनीतिक लामबंदी के नए अवसर खोले हैं, किंतु लैंगिक उत्पीड़न, गलत सूचना तथा डिजिटल असमानता जैसे कारक इसकी पूर्ण क्षमता को बाधित करते हैं। यह अध्ययन इन द्वंद्वों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत कर आगे के शोध के लिए आधार तैयार करता है।

3. शोध प्रक्रिया

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश की महिलाओं द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से राजनीतिक लामबंदी का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करने के लिए द्वितीयक स्रोतों पर आधारित गुणात्मक शोध प्रक्रिया का अनुसरण करता है। शोधकर्ता ने विभिन्न शैक्षणिक पत्रिकाओं, रिपोर्टों, समाचार स्रोतों तथा उपलब्ध ऑनलाइन सामग्री से प्राप्त आंकड़ों तथा विश्लेषणों का संकलन किया है। मुख्य रूप से 2014 के बाद के कालखंड पर ध्यान केंद्रित किया गया है, क्योंकि इसी अवधि में भारत में डिजिटल माध्यमों का तेज प्रसार हुआ तथा राजनीतिक लामबंदी में इनकी भूमिका उभर कर सामने आई।

साहित्य चयन के लिए निम्नलिखित मानदंड अपनाए गए: (1) उत्तर प्रदेश की महिलाओं तथा सोशल मीडिया से संबंधित अध्ययन, (2) राजनीतिक भागीदारी, लामबंदी तथा सशक्तिकरण पर केंद्रित शोध, (3) 2019 लोकसभा चुनाव, 2022 विधानसभा चुनाव तथा सीएए विरोधी आंदोलन जैसे प्रमुख घटनाक्रमों से जुड़े संदर्भ। विषयवस्तु विश्लेषण (थीमैटिक एनालिसिस) की विधि का उपयोग करके स्रोतों से प्रमुख थीमों जैसे सशक्तिकरण, बाधाएं, हैशटैग सक्रियता तथा लैंगिक उत्पीड़न का उद्घाटन किया गया।

प्राथमिक डेटा संग्रहण की बजाय द्वितीयक स्रोतों पर निर्भरता के कारण यह अध्ययन व्यापक साहित्य समीक्षा पर आधारित है। इससे उत्तर प्रदेश के ग्रामीण तथा शहरी संदर्भों में डिजिटल राजनीति की जटिलताओं का व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त होता है। शोध की सीमाएं हैं कि यह मुख्य रूप से उपलब्ध प्रकाशित सामग्री पर आधारित है, जिससे स्थानीय स्तर की सूक्ष्म अनुभवों का पूर्ण चित्रण संभव नहीं हो सका। भविष्य में प्राथमिक सर्वेक्षण या साक्षात्कार आधारित अध्ययन से इसकी पूरकता की जा सकती है।

५. आंकड़ा विश्लेषण

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश की महिलाओं द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से राजनीतिक लामबंदी का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। विश्लेषण मुख्य रूप से द्वितीयक आंकड़ों पर आधारित है, जिसमें शैक्षणिक अध्ययन, सर्वेक्षण रिपोर्टें, चुनाव आयोग के आंकड़े तथा विभिन्न संगठनों की प्रकाशित सामग्री शामिल हैं। इन आंकड़ों के आधार पर महिलाओं की सोशल मीडिया उपयोगिता, राजनीतिक भागीदारी, डिजिटल विभाजन तथा चुनावी प्रभावों का मूल्यांकन किया गया है। प्रतिशत, सर्वेक्षण परिणाम तथा क्षेत्रीय विविधताओं को उद्धृत करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि सोशल मीडिया ने महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता तथा लामबंदी को बढ़ावा दिया है, किंतु लैंगिक असमानता, सीमित पहुंच तथा ऑनलाइन उत्पीड़न जैसी बाधाओं ने इसकी पूर्ण क्षमता को सीमित किया है (बंसल, 2025)।

उत्तर प्रदेश में महिलाओं की सोशल मीडिया उपयोगिता के आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि डिजिटल माध्यमों का प्रसार तेजी से हुआ है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश की ग्रामीण महिलाओं में 2020-2022 के दौरान सोशल मीडिया उपयोग में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई, जहां 49 प्रतिशत महिलाओं ने इस अवधि में सोशल मीडिया का उपयोग प्रारंभ किया, जबकि 2018-2019 में यह मात्र 34 प्रतिशत था। यह वृद्धि मुख्यतः कोविड-19 महामारी के दौरान हुई, जब महिलाओं ने सूचना प्राप्ति तथा मनोरंजन के लिए इन प्लेटफॉर्मों का सहारा लिया (बंसल, 2025)। दैनिक उपयोग के संदर्भ में 49 प्रतिशत महिलाएं 1-2 घंटे, 33 प्रतिशत 3-5 घंटे तथा लगभग 1 प्रतिशत 10 घंटे से अधिक समय व्यतीत करती हैं। उपयोग की प्रमुख गतिविधियों में 92 प्रतिशत महिलाएं वीडियो देखती हैं, 76 प्रतिशत संगीत सुनती हैं तथा 75 प्रतिशत मनोरंजन संबंधी सामग्री देखती हैं। राजनीतिक समाचार देखने वाली महिलाओं का प्रतिशत 43 है, जो दर्शाता है कि सोशल मीडिया राजनीतिक जागरूकता का माध्यम बन रहा है, यद्यपि उपयोग मुख्यतः मनोरंजन केंद्रित है। यूट्यूब सबसे लोकप्रिय प्लेटफॉर्म है (46 प्रतिशत), उसके बाद इंस्टाग्राम (27 प्रतिशत) तथा व्हाट्सएप (16 प्रतिशत)। ये आंकड़े दर्शाते हैं कि सोशल मीडिया महिलाओं के दैनिक जीवन में गहराई से प्रवेश कर चुका है, जिससे राजनीतिक लामबंदी के अवसर बढ़े हैं (बंसल, 2025)।

राजनीतिक भागीदारी के आंकड़ों का विश्लेषण करने पर उत्तर प्रदेश में महिलाओं का मतदान प्रतिशत ऐतिहासिक रूप से बढ़ता हुआ दिखाई देता है। 1962 के लोकसभा चुनाव में महिलाओं का मतदान प्रतिशत मात्र 46.6 था, जबकि पुरुषों का 63.3 था। 2019 तक यह बढ़कर 59.56 प्रतिशत हो गया, जो पुरुषों की तुलना में तेज वृद्धि को दर्शाता है। पिछले 50

वर्षों में पुरुष मतदान में लगभग 3.8 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि महिलाओं में लगभग 19 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। यह वृद्धि पंचायती राज सुधारों, स्वयं सहायता समूहों तथा महिला-केंद्रित योजनाओं के प्रभाव को दर्शाती है (इंडिया टुडे, 2024)। 2022 के विधानसभा चुनावों में महिलाओं की मतदान भागीदारी 62.22 प्रतिशत रही, जो पुरुषों से अधिक थी। कांग्रेस द्वारा 40 प्रतिशत टिकट महिलाओं को देने से 'मैंलड़कीहूँलड़सकतीहूँ' जैसे अभियान चले, जिससे महिलाओं की भागीदारी में वृद्धि हुई (न्यूज़क्लिक, 2022)।

उत्तर प्रदेश की मुस्लिम महिलाओं पर किए गए एक अध्ययन में सोशल मीडिया उपयोग तथा सशक्तिकरण के बीच सकारात्मक संबंध पाया गया। सर्वेक्षण से पता चला कि निष्क्रिय उपयोग (सामग्री देखना) से सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों पर जागरूकता बढ़ती है, जबकि सक्रिय उपयोग (सामग्री साझा करना) सामाजिक नेटवर्क को मजबूत करता है तथा प्रमुख विमर्शों को चुनौती देता है। नागरिकता संशोधन अधिनियम विरोधी आंदोलनों में मुस्लिम महिलाओं ने सोशल मीडिया के माध्यम से समन्वय स्थापित किया, जिससे उनकी आलोचनात्मक चेतना में वृद्धि हुई (परवीन, अविदित)।

डिजिटल विभाजन के आंकड़े सशक्तिकरण की सीमाओं को स्पष्ट करते हैं। उत्तर प्रदेश में इंटरनेट साक्षरता में लैंगिक अंतर 28.5 प्रतिशत है, जो राष्ट्रीय स्तर पर अधिक है। पुरुषों में इंटरनेट उपयोग औसतन 63.06 प्रतिशत है, जबकि महिलाओं में 40.65 प्रतिशत है। ग्रामीण क्षेत्रों में यह अंतर और अधिक है, जहां पुरुषों के 49 प्रतिशत की तुलना में महिलाओं के मात्र 25 प्रतिशत ने इंटरनेट उपयोग किया है (गुप्ता आदि, 2023)। मोबाइल फोन स्वामित्व में भी अंतर देखा जाता है; 79 प्रतिशत पुरुषों की तुलना में 67 प्रतिशत महिलाओं के पास मोबाइल है। उत्तर प्रदेश में महिला साक्षरता दर लगभग 60 प्रतिशत होने के कारण डिजिटल पहुंच सीमित है। ग्रामीण महिलाओं में मोबाइल इंटरनेट उपयोग पुरुषों से 56 प्रतिशत कम है। ये आंकड़े दर्शाते हैं कि डिजिटल विभाजन जाति, धर्म तथा क्षेत्रीय असमानताओं से जुड़ा है, जहां दलित तथा मुस्लिम महिलाओं में पहुंच और भी कम है तथा ऑनलाइन उत्पीड़न उनके सशक्तिकरण को बाधित करता है (जीएसएमए, 2024; परवीन, अविदित)।

2022 के चुनावों में सोशल मीडिया के प्रभाव के आंकड़ों से पता चलता है कि भारतीय जनता पार्टी ने डेटा-आधारित रणनीतियों के माध्यम से महिला मतदाताओं को लक्षित किया, जिससे महिला मतदान में वृद्धि हुई। व्हाट्सएप राजनीतिक चर्चाओं में लैंगिक असभ्यता को बढ़ाता है, जहां महिलाओं को 18 प्रतिशत अधिक यौन उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है। उत्तर प्रदेश में बहुदलीय प्रतिस्पर्धा के दौरान महिला प्रत्याशियों को लक्षित संदेश मतदाता धारणाओं को प्रभावित करते हैं (नेयाजी आदि, 2025)। हैशटैग अभियान जैसे 'दलितलाइव्समैटर' ने हाथरस मामले में महिलाओं की आवाज को मजबूत किया, जिससे सरकारी प्रतिक्रिया हुई। विश्वविद्यालय छात्राओं में 94.5 प्रतिशत सोशल मीडिया से राजनीतिक जागरूकता प्राप्त करती हैं।

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 87 प्रतिशत महिलाएं शिक्षा संबंधी जानकारी, 82.6 प्रतिशत स्वास्थ्य संबंधी जानकारी तथा 34.8 प्रतिशत रोजगार संबंधी जानकारी सोशल मीडिया से प्राप्त करती हैं। अंधविश्वास तथा सामाजिक कुरीतियों में कमी के लिए 45 प्रतिशत महिलाएं सोशल मीडिया को जिम्मेदार मानती हैं, जबकि 18 प्रतिशत महिलाओं का मानना है कि सोशल मीडिया ने उनके जीवन में कोई विशेष परिवर्तन नहीं लाया (बंसल, 2025)। क्षेत्रीय विविधताओं में मेरठ, सहारनपुर, अलीगढ़, मुरादाबाद तथा आगरा जैसे मंडलों में उपयोग अधिक है, किंतु ग्रामीण क्षेत्रों में कम है।

कुल मिलाकर, आंकड़े दर्शाते हैं कि सोशल मीडिया ने उत्तर प्रदेश की महिलाओं को राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, किंतु डिजिटल विभाजन तथा ऑनलाइन उत्पीड़न जैसी बाधाओं को दूर करने के लिए डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम, सुरक्षित ऑनलाइन वातावरण तथा समावेशी नीतियां आवश्यक हैं। भविष्य में प्राथमिक आंकड़ों के माध्यम से इस विश्लेषण को और अधिक गहन बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश की महिलाओं द्वारा सोशल मीडिया के माध्यम से राजनीतिक लामबंदी की प्रक्रिया का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करता है। उत्तर प्रदेश जैसे राज्य में, जहां पितृसत्तात्मक संरचनाएं मजबूत हैं तथा महिलाओं की पारंपरिक राजनीतिक भागीदारी सीमित रही है, सोशल मीडिया ने एक क्रांतिकारी माध्यम के रूप में कार्य किया है। व्हाट्सएप, एक्स (पूर्व ट्विटर), फेसबुक तथा इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्मों ने महिलाओं को पारंपरिक द्वारपालोंकृजैसे परिवार, समुदाय तथा राजनीतिक दलकृको दरकिनार कर अपनी आवाज बुलंद करने, संगठन करने तथा जनमत निर्माण करने का अवसर प्रदान किया है।

शोध के प्रमुख निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया ने महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता तथा सक्रियता में उल्लेखनीय वृद्धि की है। मतदान प्रतिशत में महिलाओं की भागीदारी 1962 के 46.6 प्रतिशत से बढ़कर 2019 में 59.56 प्रतिशत हो गई है, तथा 2022 के विधानसभा चुनावों में महिलाओं का मतदान पुरुषों से अधिक रहा। मुस्लिम महिलाओं के संदर्भ में सोशल मीडिया ने सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों पर आलोचनात्मक चेतना विकसित की है, जहां निष्क्रिय उपयोग जागरूकता बढ़ाता है तथा सक्रिय उपयोग (सामग्री साझा करना) सामुदायिक नेटवर्क को मजबूत करता है तथा प्रमुख विमर्शों को चुनौती देता है। नागरिकता संशोधन अधिनियम विरोधी आंदोलनों तथा हाथरस जैसे मामलों में हैशटैग अभियानों ने महिलाओं की आवाज को राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचाया तथा सरकारी प्रतिक्रिया को बाध्य किया। राजनीतिक दलों ने भी डेटा-आधारित रणनीतियों से महिला मतदाताओं को लक्षित किया, जिससे उनकी राजनीतिक भूमिका मतदाता से अभियानकर्ता तक विकसित हुई।

तथापि, सशक्तिकरण की इस यात्रा में प्रमुख बाधाएं विद्यमान हैं। डिजिटल विभाजन उत्तर प्रदेश में सबसे प्रमुख चुनौती है, जहां इंटरनेट उपयोग में लैंगिक अंतर 28.5 प्रतिशत है पुरुषों में 63.06 प्रतिशत तथा महिलाओं में 40.65 प्रतिशत। ग्रामीण क्षेत्रों में यह अंतर और अधिक है, तथा महिला साक्षरता दर लगभग ६० प्रतिशत होने से पहुंच सीमित रहती है। ऑनलाइन लैंगिक उत्पीड़न तथा असभ्यता भी महिलाओं की भागीदारी को हतोत्साहित करती है; व्हाट्सएप जैसे प्लेटफॉर्मों पर महिलाओं को 18 प्रतिशत अधिक यौन उत्पीड़न का सामना करना पड़ता है, जो भावनात्मक ध्रुवीकरण को बढ़ाता है। जाति, धर्म तथा क्षेत्रीय असमानताएं इन बाधाओं को और जटिल बनाती हैं, जहां दलित तथा मुस्लिम महिलाओं को अतिरिक्त जोखिमों का सामना करना पड़ता है।

कुल मिलाकर, सोशल मीडिया ने उत्तर प्रदेश की महिलाओं के लिए राजनीतिक लामबंदी के नए द्वार खोले हैं तथा पितृसत्तात्मक संरचनाओं को चुनौती दी है। यह माध्यम लोकतंत्र को अधिक समावेशी बनाने की क्षमता रखता है, किंतु इसकी पूर्ण क्षमता तभी प्राप्त होगी जब डिजिटल विभाजन को कम किया जाए तथा ऑनलाइन सुरक्षा सुनिश्चित की जाए। नीतिगत स्तर पर डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों, महिला-केंद्रित इंटरनेट पहुंच योजनाओं तथा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्मों पर लैंगिक उत्पीड़न विरोधी सख्त नियमों की आवश्यकता है। भविष्य के शोध में प्राथमिक डेटाकृजैसे उत्तर प्रदेश की ग्रामीण तथा शहरी महिलाओं से साक्षात्कार तथा सर्वेक्षणकृके माध्यम से इन निष्कर्षों को और गहनता प्रदान की जा सकती है। अंततः, डिजिटल राजनीति उत्तर प्रदेश में लैंगिक समानता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हो सकती है, बशर्ते कि इसे समावेशी तथा सुरक्षित बनाया जाए।

संदर्भ सूची

[1] बंसल, ई. (2025). *पश्चिमी उत्तर प्रदेश की ग्रामीण महिलाओं के जीवन पर सोशल मीडिया के प्रभाव का अध्ययन*. इंटरनेशनल जर्नल फॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च. उपलब्ध: https://ijmrf.com/papers/2025/1/36936.pdf

[2] चौधरी, ए. (2024). *भारत में डिजिटल युग की महिलाएँ*. वर्ल्ड रिसर्च ऑफ पॉलिटिकल साइंस जर्नल. उपलब्ध: https://core.ac.uk/download/pdf/642713611.pdf

[3] दी मेको, एल. (2023). *डिजिटल भीड़ और उसके समर्थक: भारत की राजनीति में महिलाओं के विरुद्ध लैंगिक दुष्प्रचार और ऑनलाइन उत्पीड़न*. She Persisted. उपलब्ध: https://shepersisted.org/wp-content/uploads/2023/04/ShePersisted-India.pdf

[4] गुप्ता, टी., एवं अन्य. (2023). *भारत में इंटरनेट साक्षरता में लैंगिक अंतर: राज्य स्तरीय विश्लेषण*. स्कॉलर्स जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स, बिजनेस एंड मैनेजमेंट.

[5] GSMA. (2024). *मोबाइल जेंडर गैप रिपोर्ट 2024*. उपलब्ध: https://www.gsma.com/r/wp-content/uploads/2024/05/The-Mobile-Gender-Gap-Report-2024.pdf

[6] इंडिया टुडे. (2024). *लोकसभा 2024: महिला मतदाताओं में वृद्धि के बावजूद महिला सांसदों की संख्या में कमी*. उपलब्ध: https://www.indiatoday.in/story/lok-sabha-election-results-2024-women-mps-in-parliament-decreased-female-voters-increase-2550592-2024-06-08

[7] नेयाजी, टी. ए., कुरु, ओ., एवं मुखर्जी, एस. (2025). *व्हाट्सएप राजनीतिक चर्चाओं में लैंगिकता और असभ्यता का प्रभाव: भारत के 2022 बहुदलीय चुनाव से साक्ष्य*. द इंटरनेशनल जर्नल ऑफ प्रेस/पॉलिटिक्स. https://doi.org/10.1177/19401612241242431

[8] न्यूज़क्लिक. (2022). *2022 के चुनावों में सत्ता की कुंजी बनी महिला मतदाता*. उपलब्ध: https://www.newsclick.in/women-voters-hold-key-power-2022

[9] परवीन, बी. (अविदित). *जनमत निर्माण: उत्तर प्रदेश में मुस्लिम महिलाओं के सशक्तिकरण में सोशल मीडिया की भूमिका*. एशियन जर्नल फॉर पब्लिक ओपिनियन रिसर्च. उपलब्ध: https://ajpor.org/article/138608

[10] राज, एस. (2023). *डिजिटल मीडिया तथा भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी*. जर्नल ऑफ एशियन एंड अफ्रीकन स्टडीज. https://doi.org/10.1177/09760911231185975

[11] अंतर-संसदीय संघ (Inter-Parliamentary Union). (2024). *महिलाओं का संसदीय प्रतिनिधित्व*. उपलब्ध विभिन्न शोध आलेखों में उद्धृत।